उपसंहार

उपसंहार

कवि भारतभूषण अग्रवाल का 'अग्नि-लीक'खण्डकाव्य कई विशेषताओं को लेकर सामने आता है। इसलिए समस्त विशेषताओं अर्थात निष्कर्षों को इस प्रकार कह सकते हैं।

कवि भारतभूषण अग्रवाल आधुनिक कविता के 'नई कविता' के महत्त्वपूर्ण कवि है। अग्रवाल जी अज्ञेय के तारसप्तक में संकलित किए गए हैं। उनकी अनेक कृतियाँ प्रसिद्ध हुई हैं। उनकी कविताएँ अपनी अनेक विशेषताओं के साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत होती हैं तथा अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है। अग्रवाल जी आस्था के कवि हैं। उनके विचार बहुत ही उच्च हैं। उनके विचारों में सामाजिक सच्चाई है। वे यथार्थ की कटूता से टकरा गयें हैं। उनके मन में गरीब, शोषित, करूण वर्ग के प्रति आस्था हैं। वे जिंदगी से हार मानने वालों में से नहीं है। उनके हर एक शब्द में यथार्थ की अनुभूति झलकती है। उन्होंने अपनी युग के परिवेश को पुरी तरह जाना है, समझा है तथा परिस्थिति के अनुरूप अपने विचार व्यक्त किए हैं। जिंदगी से हारे हुए लोगों को हिम्मत से काम लेने का उपदेश दिया है। भारत जी ने राजनीति और भ्रष्टाचार का विरोध किया है। भारत जी को यथार्थवादी कहें तो अनुचित नहीं होगा।

नई कविता में पौराणिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्राकृतिक प्रतीकों का काफी मात्रा में प्रयोग हुआ है। नई कविता हिंदी साहित्य की प्रतिनिधि काव्यधारा है। नई कविता पर प्रायः आरोप लगाया जाता है कि वह अभारतीय एवं परंपरा से रहित है। किन्तु इस आरोप को नई कविता के कवियों ने मिथ्या साबित किया है। 'अंधा युग', 'एक कंठ विषपायी', 'संशय की एक रात' आदि इसके उदाहरण है। प्रायः सभी समर्थ कवियों ने 'कुंती', 'तक्षक', 'अभिमन्यु', 'एकलव्य', 'जटायु', 'राहु' आदि पौराणिक संदर्भों का उपयोग किया है।

अज्ञेय के प्रथम तार सप्तक में संकलित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा इन सब कवियों में भारतभूषण अग्रवाल जी ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। भारत जी हिन्दी साहित्य के लिए अभूतपूर्व देन हैं। उन्होंने अपनी महत्त्वपूर्ण रचनाओं से हिन्दी साहित्य में अपना

स्थान बनाए रखा हैं। उनकी कविताओं में प्रेम, प्रणयभावना, कोमलता के स्वरों के साथ सच्चाई और यथार्थ का स्पष्ट चित्रण दृष्टिगत होता है।

भारतभूषण अग्रवाल जी पर मार्क्सवाद का प्रभाव रहा है, यही मार्क्सवाद उन्हें सामाजिक सत्य, यथार्थ पर खड़ा रहने के लिए विवश कर देता है। ध्यान से देखा जाय तो भारत जी में कहीं कहीं वैयक्तिकता और सामाजिकता का द्वन्द्व दिखाई देता है। भारतभूषण की कविता का उद्देश्य व्यक्ति की ईकाई और समाज की व्यवस्था के बीच सम्बन्ध को स्वर देना और उसको शुभ बनाने में सहायक होना स्विकार करते हैं।

हम कह सकते है कि स्वच्छदतावादी युग के बाद काव्य को समृध्द करनेवाले रचनाकारों में भारत जी की रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। भारत जी आस्था और विश्वास के कवि हैं। उनकी हिचक, दुविधा और कायर वाणी आगे जाकर बहुत सशक्त और निर्भिक हो गयी है। भारत जी बहुत ही बौध्दिक चेतना के कवि हैं। उनकी कविता का विषय क्षेत्र बहुत बड़ा है। उनकी रचनाओं में मनुष्य की आंतरिक पीड़ा को व्यक्त कर देने की ताकद है। कवि को जीवन के प्रति विशेष प्रेम है। कवि सामाजिक दर्द को अपनाने वाले, सुख-दुःख में उनके साथ रहनेवाले महान व्यक्ति हैं। उनकी कविताएँ हमारे लिए मूल्यवान हैं, जो हमारे जीवन में सक्रिय, प्रामाणिक कवि के संघर्ष को पारदर्शी रूप में प्रस्तुत करती हैं। हम उस संघर्ष को महसूस कर सकते हैं।

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य सन् 1976 में प्रकाशित हुआ है। यह उनके अंतिम दिनों की रचना है। इस कृति में राम को शुध्द मानव के रूप में अंकित करने का सशक्त प्रयास किया गया है। इस खण्डकाव्य में उन्होंने श्रद्धा के सारे घटाटोप को चीरकर, कलाकार की नितान्त वैयक्तिक दृष्टि से राम के चारित्रिक अन्तर्विरोधों की पडताल की है। इस खण्डकाव्य में जो चरित्र प्रस्तुत हुआ है वह सर्वथा मानवीय और सहज विश्वसनीय है।

भारत जी की 'अग्नि-लीक' कृति को 'खंडकाव्य' तथा 'काव्यनाटक' कहा गया है। 'खंडकाव्य' शब्द साहित्य जगत में नहीं है। इसका अस्तित्व संस्कृत काल से ही है। किन्तु इस विधा का नामकरण और इसका स्वरूप स्पष्ट रूप से

आधुनिक काल में ही अधिक निश्चित हो पाया है। खण्डकाव्य में मनोवैज्ञानिक चित्रण होता है। खण्डकाव्य व्यक्ति के जीवन की घटना विशेष से सम्बन्धित होता है। खण्डकाव्य में किसी एक घटना, परिस्थिति अथवा पहलू का वर्णन होने के कारण इतना अवसर ही नहीं होता कि जीवन का समग्रता से वर्णन किया जा सके। खण्डकाव्य का कथानक ऐतिहासिक, पौराणिक या काल्पनिक भी हो सकता है।

संस्कृत काव्यशास्त्र में खंडकाव्य शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कविराज विश्वनाथ ने अपने 'साहित्य दर्पण' में किया है। उससे पूर्व आचार्यों के मस्तिष्क में 'खण्डकाव्य' की धुंधली कृति थी। आचार्य भामह, दंडी, रूद्रट, आनन्दवर्धन ने उसका वर्गीकरण काव्य, महाकाव्य, काव्यशरीर, प्रबंधकाव्य और आख्यायिका, खण्डकथा, परिकथा, सकलकथा आदि नामों का उल्लेख किया है।

आचार्य, विश्वनाथ, डॉ.भगीरथ मिश्र, आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ.गुलाबराय, डॉ.शकुन्तला दुबे, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा आदि ने इसकी परिभाषाएँ दी है। 'खण्डकाव्य' विषयक पाश्चात्य विद्वान प्लुतो, अरस्तू, विलियम हेनरी हडसन आदि अनेक विचारवंतों ने अपने मत दिये हैं। अनेक विचारवंतों के अलग-अलग मतों को देखते हुए खण्डकाव्य के कुछ तत्त्व बनाए है।

खण्डकाव्य के प्रमुख तत्त्व कथानक, पात्र, देशकाल वातावरण, उद्देश्य एवं शैली के रूप में उभरकर सामने आते हैं। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर हमने 'अग्नि-लीक' का अध्ययन किया है। 'अग्नि-लीक' को 'काव्यनाटक' भी कहा गया है। इसमें काव्य नाटक के गुण है किन्तु स्वयं भारतभूषण अग्रवाल जी ने इसे 'खण्डकाव्य' कहा है। क्योंकि वे इसे एक अच्छा रंगमंचिय काव्यनाटक बनाना चाहते थे किन्तु इस आलेख से वह सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि उन्हें लगता था कि यह नाटक से अधिक खण्डकाव्य हो गया है। नाटय समीक्षक नेमिचंद्र जैने ने 'अग्नि-लीक' को काव्यनाटक कहा है। किन्तु भारत जी ने इसे 'खण्डकाव्य' कहा है। इसीलिए हमने इस 'काव्यनाटक' को 'खण्डकाव्य' के तत्त्वों के नुसार अध्ययन किया है।

'अग्नि-लीक' में भारत जी ने सीता निर्वासन के प्रसंग को लिया है। राम एक महत्त्वाकांक्षी राजपुरूष हैं । किसी भी किमत पर समाज के एक विशिष्ट वर्ग में

प्रतिष्ठा प्राप्त करना और एक के बाद एक विजय प्राप्त करना उनका लक्ष्य रहा था। जिसके लिए वे आजीवन समर्पित रहें। 'अग्नि-लीक' में हमने देखा कि किस प्रकार सीता अपने पती राम पर आरोप करती है, यही इस खण्डकाव्य का मुख्य स्वर है। सीता का मानना है कि रामराज्य में प्रजा का हित भी मात्र कोरा प्रचार है। प्रजा का हित उनके लिए सर्वोपरि होता तो उनके राज्य में अकाल क्यों पडता? सीता के ऐसे कई प्रश्न सामने आते हैं जिसके कारण 'अग्नि-लीक' के पात्रों का अंतर्विरोध स्पष्ट होता जाता है।

'अग्नि-लीक' की सीता और वाल्मीकि 'रामायण' की पौराणिक सीता में बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है। वाल्मीकि की सीता पारंपारिक रितिरिवाजों को माननेवाली, अपने से छोटे, बड़ों का सम्मान करनेवाली स्त्री हैं किन्तु भारत जी की सीता उससे अलग है। भारत जी की सीता आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करनेवाली सशक्त स्त्री है। 'अग्नि-लीक' की सीता में आधुनिक स्त्री के सारे गुण दिखाई देते हैं। 'अग्नि-लीक' की सीता अपने प्यार, जजबात को ज्यादा महत्त्व देती है। स्वयं पर होते हुए अन्याय, अत्याचार के प्रति आवाज उठाना चाहती है। अपने अधिकारों की माँग करती है। वह अपने आत्मसम्मान को ज्यादा महत्त्व देती है। राम के प्रति उसके मन में बहुत क्रोध है। आक्रोश में आकर विद्रोह करती है। पौराणिक सीता की तरह वह बार-बार परिक्षा देना जरूरी नहीं समझती। स्वयं को पवित्र साबित करने के लिए वह ऐसी कोई परिक्षा देना जरूरी नहीं समझती जिसमें उसका अपमान होता है। वह मरना पसंद करती है किन्तु अपने आत्मसम्मान को बलिवेदी पर चढने नहीं देती है। वह राम पर बहुत सारे आरोप लगाती है। ऐसा प्रतित होता है कि सीता अपने अधिकारों के लिए कोर्ट तक जानेवाली महानगरीय स्त्री है। आक्रोश में आकर सीता अपने सास-ससुर तक को कोसती हुई दिखाई देती है जो एक आदर्श बहु को शोभा नहीं देता। इससे सीता की छवि कुहरिल होने से नहीं चूकती। क्योंकि अभी तक जो संस्कार सीता के नारीत्व के बारे में हमने अपने मन में संजोए है, उनके एकदम विपरित स्थिति पाकर कुछ ठेंस जरूर लगती है।

बावजुद इसके हमने यहाँ सिर्फ बदलते युग के स्त्री के रूप को देखा है जो स्वयं के आत्मसम्मान के लिए लढना चाहती है तथा स्वयं के अस्तित्व को निखार देती है। कवि का उद्देश्य भी यही है कि संसार की एक-एक स्त्री 'अग्नि-लीक' की

सीता की तरह सशक्त और साहसी बननी चाहिए।

'अग्नि-लीक' के राम दिग्विजयी नहीं बल्कि आत्मजयी बनना चाहते है। उन्होंने खोखले राजनीति के चक्कर में पडकर सारे रिश्ते-नाते तोड दिए हैं। राजनीति के कारण उनके रिश्तों में दरार पड गई है। उन्होंने रिश्तों से ज्यादा राजनीति को महत्त्व दिया है। अंत में राम अपनी सारी भूलों को स्विकारते हैं किन्तु इसका जड जनता पर थोंप देते है। सीता अपने प्राणों की आहुति देकर राम में वास्तविकता का अहसास जगा जाती है। जिसे कवि बेकार जाने नहीं देते। राम का सारा भ्रम टूट जाता है तथा उन्हें बहुत पश्चाताप होता है। अपने दोनों बेटों को अपनाते हैं और 'रामराज्य को देवी की मन्त्रणा का इतिहास' मानते हुए शेष जीवन में सीता से मिली 'अग्नि' अर्थात जीवन-दर्शन के प्रति समर्पित हो जाते हैं।

आजतक हमने राम पर आधारित जितने भी काव्य देखे हैं, सुने भी हैं वाल्मीकि ने अपने राम के पात्र को नीचे गिरने नहीं दिया है। उनके मन में सीता के प्रति आदर है, उसकी दर्द को वे समझ सकते है किन्तु फिर भी राम की पैरवी करते दिखाई देते है। किन्तु 'अग्नि-लीक' में भारत जी ने राम से ज्यादा सीता को महत्त्व दिया है। कवि ने सीता को माध्यम बनाकर संसार की समस्त स्त्री जाती के दुःख को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

हमने यह देखा है कि 'अग्नि-लीक' में 'रथवान' प्रजा का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। उसको राम की प्रजा होने का दुःख है। सीता को बनोवास में छोडकर आने के कार्य को स्वयं का कुकर्म समझता है। सीता के दुःख को महसूस कर रथवान की आँखें आज भी गीली हो जाती है। राम की राजनीतिक व्यवस्था और खोंखले आदर्शो को रथवान धिक्कारता है। 'अग्नि-लीक' में राजपुरूष एक सत्तावर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है, जो पुरूषार्थ को महत्त्व देते हुए राम का समर्थन करता है। उसकी दृष्टि से राम की राजनीतिक कार्य पध्दती ही सर्वोत्कृष्ट और जनहितैषी है। 'अग्नि-लीक' में 'कौशिकी' स्त्री पात्र है जो सामाजिक है। कौशिकी वाल्मीकि आश्रम की दासी है जो सीता की बीमारी में उसकी परिचर्या करती है और सीता के दुःखों को दूर करने का प्रयास भी करती है। 'अग्नि-लीक' में चरण एक आदिवासी पात्र है जो

आदिवासी समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है तथा आदिवासी समुदाय के मोहभंग और आक्रोश को सूचित करता है। इस खण्डकाव्य के अंत में लव-कुश भी है जो बहुत ही अभागे है। उन्हें माँ-पिता का प्यार एक साथ कभी नहीं मिलता। जब माँ थी तब पिता होकर भी नहीं थे। जैस-तैसे पिता मिले माँ से वंचित होना पडता है।

कोई भी कवि अपनी रचनात्मक क्षमता को भाषा के द्वारा और सशक्त बनाता है। भारतभूषण अग्रवाल कविता में अनुभूति और शिल्प को अलग नहीं मानते । उन्होंने शिल्प के स्तर पर अनेक प्रयोग किए हैं। भाषा के अंतर्गत भी उन्होंने अनेक प्रयोग किए हैं।

'अग्नि-लीक' की भाषा मिश्रित हैं। 'अग्नि-लीक' की भाषा चुस्त-दुरूस्त , वेगपूर्ण और सरल है। भाषा में 'कथ्य' को गहराई तथा चरित्रों का विकास करने की क्षमता है। भाषा में सांकेतिकता, प्रौढ़ता, सरलता, विषयानुकूलता, भावानुकूलता, प्रेषणीयता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहशीलता, भाषा की विशालता, संवादात्मकता, प्रश्नात्मकता, मुहावरों का प्रयोग तथा पूर्वदीप्ति शैली आदि का प्रयोग किया गया है। अभिव्यक्ति और व्यंजनात्मकता से काव्यभाषा में अभूतपूर्व महानता आयी है। मंच के नए रूपबध्द और नेपथ्यगत ध्वनियोजना के साथ प्रकाश क्रम के द्वारा दृश्य परिवर्तन की शैली समाविष्ट हुई है। यह काव्यभाषा जैसे (सीता और वाल्मीकि के संवाद शेली वाले दृश्यों में) अधिक व्यंजनापूर्ण होकर निखरी और संवर गई है। वास्तव में यह खंडकाव्य आदर्श संवादयोजना का सुष्ट निर्देशन कहा जा सकता है। भारत जी ने भावों की अभिव्यक्ति के लिए व्याकरणिक चिन्हों का प्रयोग कर भाषा को अधिक संवेदनशील और प्रभावकारी बनाया है। भारत जी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल रही है। भाषा की अर्थवत्ता की दृष्टि से आक्रोश और करूणा से भरी है। मुहावरों का प्रयोग भी सार्थ हुआ है। कुल मिलाकर भाषा सौंदर्य की दृष्टि से यह रचना सहज, सरल और सुस्पष्ट फलदायी है। कवि को इसमें पूर्ण सफलता मिली हैं।